चतुर्थ - वर्ग

8. फेंगसुई वास्तुशास्त्र का सामान्य परिचय दीजिए? तथा गृह-निर्माण हेतु इसके उपयोगी सिद्धान्तों पर प्रकाश डालिए? 10

9. फेंगसुई वास्तुशास्त्र के अनुसार प्रमुख वास्तुदोषों तथा उनके उपचार-विधानों पर प्रकाश डालिए? 10

A **(Printed Pages 4)**

Roll No. _____

AS-2224

M.A. (Semester-II) Examination, 2015

ज्योतिर्विज्ञान

Paper-III

(वास्तु-ज्योतिष)

Time Allowed : Three Hours] ***[Maximum Marks : 70***

निर्देश : कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** है। प्रत्येक वर्ग से **एक** प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है।

1. अधोलिखित प्रश्नों के सङ्क्षिप्त उत्तर दीजिए? 3×10=30

(क) दकार्गल से क्या अभिप्राय है ?

(ख) फेंगसुई से आप क्या समझते हैं?

(ग) वास्तुदोष से क्या अभिप्राय है?

(घ) दक्षिण दिशा की ओर अभिमुख प्रशस्त देवविग्रहों के नाम बताइए?

(ङ) 'अश्वैै रूद्रैर्दिग्भिरूक्तं हयसत्सत्' के सिद्धान्त को स्पष्ट कीजिए?

(च) गृह के सोलह नामों में अशुभ नामों का उल्लेख कीजिए?

(छ) मुहूर्त चिन्तामणि के अनुसार किस अशुभ ग्रहयोग में गृह निर्माण करने पर वह घर एक वर्ष के अन्दर दूसरे के हाथ में चला जाता है?

(ज) गृह प्रवेश में वाम रवि का विचार कैसे करते हैं?

(झ) वास्तुशास्त्र में 'पिण्ड' शब्द से क्या अभिप्राय है?

(ञ) पिण्ड से घर की आयु का विचार कैसे करते हैं?

प्रथम - वर्ग

2. वृहद्वास्तुमाला में उल्लिखित मनु-प्रोक्त दकार्गल का अपने शब्दों में निरूपण कीजिए। 10

3. अधोलिखित श्लोकों का अर्थ स्पष्ट कीजिए? 10

सर्वतोयाश्रयारम्भः कर्तव्यो विवलैः खलैः ।
लग्नस्थे ज्ञेऽथवा जीवे लग्नभेऽब्जेसिते खगे।।
ध्रुववासवयुग्मार्कपुष्यमैत्रमधासु च ।
वापीकूपतडागादि-वारिबन्धनमोक्षणम् ।।

द्वितीय - वर्ग

4. वृहद्वास्तुमाला में प्रोक्त देवालय-निर्माण के प्रयोजन तथा देवतानुरागस्थलों का निरूपण कीजिए। 10

5. निम्नलिखित श्लोकों की व्याख्या कीजिए? 10

चन्द्रताराबलोपेते पूर्वाह्णे शोभने दिने।
शुभलग्ने शुभांशे च कर्तुर्न निधनोदये।।
राशयः सकलाः श्रेष्ठाः शुभग्रहयुतेक्षिताः।।
शुभग्रहयुते लग्ने शुभग्रहनिरीक्षिते।।
राशिः स्वभावजं हित्वा फलं ग्रहजमाश्रयेत् ।
नारदस्य मते लग्नशुद्धिरेवं प्रकीर्तिता।।

तृतीय - वर्ग

6. मुहूर्त चिन्तामणि के विशिष्ट आलोक में गृह-विभाग अर्थात् घर की आन्तरिक रचना-व्यवस्था को स्पष्ट कीजिए। 10

7. अधोलिखित श्लोकों की विशद व्याख्या कीजिए? 10

(क) अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्र मित्रानिलान्तकैः।
समन्दैर्मन्दवारे स्याद् रक्षोभूतयुतं गृहम् ।।

(ख) एवं सुलग्ने स्वगृहं प्रविश्य वितानपुष्पश्रुतिघोषयुक्तम् ।
शिल्पज्ञदैवज्ञविधिज्ञपौरान् राजाऽर्चयेद् भूमिहिरण्यवस्त्रैः।।